بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
बयान फ़र्मूदा 03 जुलाई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(वफ़ा महीने की तिथि 03 ,1406 हश)

आँहुज़ूर ﷺ के सच्चे प्रेमी सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. की शफ़क़तों और जूदो सख़ा (दानशीलता) का ईमान वर्धक वर्णन।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 03.07.2026
محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
امّا بعد فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم۔بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمَنِ الرَّحِیۡمِ
اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمَنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहुद, तअव्वुज़, सूर: फ़ातिहा, की तिलावत के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल् अज़ीज़ ने फ़रमाया: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शफ़क़तों और जूदो सख़ा के चंद वाक़िआत पेश करूँगा।

हज़रत शैख़ याक़ूब अली इरफ़ानी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि आप अलैहिस्सलाम की अता (दान देना) एक दरिया-ए-बेकरां (ठाठे मारता हुआ समुद्र) थी और आप अलैहिस्सलाम का हाथ मोती बरसाने वाला बादल था, बरसता था और सैराब करता चला जाता था और यह सिलसिला रमज़ान के महीने में बहुत बढ़ जाता था।

अब्दुल ग़फ़्फ़ार कश्मीरी साहब बयान करते हैं कि जब उनकी शादी हुई तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें दो क़ीमती ज़ेवर दिए और यह बात हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दावे से पहले की है जब आप अलैहिस्सलाम अभी गोशा-नशीनी (एकांतवास) की ज़िन्दगी बसर करते थे।

वालिदा बशीर साहब भट्टी बयान करती हैं कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी के मौक़े पर एक मीरासी औरत ढोल लेकर आई और बजाना शुरू कर दिया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इसे कहो कि यह न बजाए और जो कुछ यह मांगती है इसे

दे दो। चुनांचे उसे चार-पांच रुपये दे दिए गए। फिर वह कहने लगी कि मुझे सर्दी लगती है। इस पर आप अलैहिस्सलाम ने उसे एक रज़ाई भी दिलवा दी।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि सबसे अव्वल यह बात ज़ेहन-नशीन कर लेनी चाहिए कि आप अलैहिस्सलाम को किसी क़िस्म के ख़ास लिबास का शौक़ नहीं था। आख़िरी दिनों के कुछ सालों में आप अलैहिस्सलाम के पास सिले-सिलाए कपड़े बहुत आते थे, ख़ास तौर पर कोट वग़ैरह। पगड़ी अक्सर ख़ुद ख़रीद कर बांधते थे। जिस तरह कपड़े तैयार होते थे उसी तरह ख़र्च भी होते जाते थे। (यानी तबर्रुक (प्रशाद) मांगने वालों को अता कर दिए जाते थे।)

हज़रत मीर महदी हुसैन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार मौलवी मुहम्मद अहसन साहब ने मुझसे "चश्मा ए मसीह" नामक पुस्तक की एक कॉपी तलब की। मैंने जवाब दिया कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि इतने नुस्ख़े दफ़्तर में मौजूद होने चाहिए क्योंकि कई बार गवर्नमेंट तलब करती है। अब कोई नुस्ख़ा ज़ायद नहीं है। आप हज़रत साहब अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में लिखकर अर्ज़ कर सकते हैं। उनके लिखने पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक नुस्ख़ा अता फ़रमा दिया।

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास मुश्क (कस्तूरी) होता था। एक दफ़ा मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मुझे मुश्क चाहिए। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस पर डिबिया मेरे आगे कर दी कि इसमें से जितना चाहिए ले लें। मैंने इसमें से थोड़ा सा उठाया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुस्कुरा कर फ़रमाया कि यह तो कुछ भी नहीं है और फिर तोला-डेढ़ तोला के नज़दीक मुश्क हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने स्वयं मुझे दे दिया।

आप अलैहिस्सलाम के दिल में अपने दोस्तों के लिए कितना दर्द था इसका एक वाक़िया यूं मिलता है। हज़रत हकीम फ़ज़्लुर रहमान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मेरी बीवी को बच्चा पैदा हुआ और उसके सातवें दिन मग़रिब के क़रीब उसे ऐंठन/मिर्गी के दौरे के आसार ज़ाहिर होने लगे। मैं मग़रिब के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास दौड़ा गया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह तो बहुत ख़तरनाक रोग के आसार हैं। तुम अपनी बीवी को हींग दे दो और घंटे-डेढ़ घंटे बाद मुझे इत्तिला दो। मैं इशा के बाद दोबारा गया और अर्ज़ किया कि मर्ज़ बढ़ गया है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम मुख़्तलिफ़ दवाएं तजवीज़ फ़रमाते रहे मगर मर्ज़ बढ़ता ही चला गया। यहां तक कि एक वक़्त पर मरीज़ा को (उल्टी) हुई, जो इस मर्ज़ में आख़िरी मरहला होता है, इसके बाद सांस उखड़ गया, गर्दन पीछे को खिंच गई, आंखों में अंधेरा आ गया और ज़बान बंद हो गई। मैं भाग कर सीढ़ियों पर चढ़ा, हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोल दिया और फ़रमाया क्यों ख़ैर है? मैंने अर्ज़ किया कि अब तो हालत बहुत नाज़ुक हो गई है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने सब तफ़्सील सुनकर फ़रमाया कि दुनिया के जितने हथियार थे वो सब तो हमने चला लिए। अब एक हथियार बाक़ी है जो दुआ है। तुम जाओ! अब मैं दुआ से उस वक़्त सर उठाऊंगा कि जब इसे सेहत होगी। मैं यह सुनकर वापस आया और बीवी से कहा कि अब तुझे क्या फ़िक्र है, अब तो ठेकेदार ने ख़ुद ठेका ले लिया है। इस वक़्त रात के दो बज चुके थे। मैं घर आया और मरीज़ा को इसी हालत में छोड़कर दूसरे कमरे में जाकर सो गया। सुबह किसी बर्तन की आहट से मेरी आंख खुली तो देखा कि बीवी सेहत-याब हो चुकी है। उसने बताया कि आप तो सो रहे थे, दो घंटे बाद अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल कर दिया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इस वाक़िए में दोस्तों के लिए दर्द और अता दोनों के आला तरीन मेयारों का पता चलता है।

एक बार क़ादियान के एक घोर विरोधी को अपने किसी मित्र के लिए कस्तूरी की ज़रुरत पड़ी, केवल इतना ही नहीं कि कस्तूरी नहीं मिलती थी, बल्कि यह एक मूल्यवान चीज़ थी। वह हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर गया और मुश्क का सवाल किया, हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़ौरन ही आधे तोले के क़रीब मुश्क उसके हवाले कर दी।

जब ताऊन (प्लेग) फैली तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की वही (इल्हाम) और इल्म के मातहत एक दवा तैयार करना शुरू की और उसका नाम 'तिर्याक़-ए-इलाही' रखा। इस दवा में कई हज़ार के जवाहरात डाले गए, बहुत सी क़ीमती दवाइयां डाली गईं। जब यह दवा तैयार हुई तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने निहायत फ़राख़-दिली के साथ इसे तक़्सीम किया। बाहर से तलब करने वालों को रजिस्टर्ड पारसल भी अपने ख़र्च से भिजवाते रहे।

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ख़त में हुज़ूर अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की कि गर्भावस्था के कारण घर में ऐसी तकलीफ़ है कि खाना तैयार नहीं हो सकता, रोटी तो तन्दूर पर पकवा ली जाती है मगर हांडी के वास्ते मुश्किल है, और गुज़ारिश की कि लंगर से खाना लगवा दिया जाए। इस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने लंगर के इंचार्ज को हिदायत फ़रमाई कि मुफ़्ती साहब को लंगर से दो वक़्त उम्दा सालन दे दिया करें।

एक बार सत्य की खोज में एक वफ़द नसीबैन भिजवाने का फ़ैसला हुआ। वफ़द के अरकान को तय्यारी के लिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने पचास-पचास रुपये अता फ़रमाए। बाद में किसी कारणवश यह वफ़्द (शिष्टमंडल) न जा सका। जब वफ़्द के एक सदस्य ने वो पचास रुपये वापस करना चाहे तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो हम किसी को दे दिया करते हैं वह हम वापस नहीं लेते।

एक बार लंगर के लिए खर्च समाप्त हो गया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बीबी साहिबा से कोई ज़ेवर लेकर, जिससे काम चल सके, उसे बेच कर प्रबंध कर लो। दो दिन बाद फिर ख़र्च ख़त्म हो गया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमने ज़ाहिरी साधन को सामने रखते हुए इन्तिज़ाम कर दिया था, अब हमें ज़रूरत नहीं है। जिसके मेहमान हैं वह ख़ुद इन्तिज़ाम कर देगा। अतः सुबह आठ-नौ बजे जब डाकिया आया तो उसके हाथ में लगभग दस-पंद्रह मनी-ऑर्डर्स थे जो सौ-सौ, पचास-पचास रुपये के थे, जो मुख़्तलिफ़ जगहों से आए थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने वो मनी-ऑर्डर्स वसूल करके तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसे) पर तक़रीर फ़रमाई।

एक बार भुखमरी का ज़ोर हुआ तो हुज़ूर अलै. ने आदेश दिया की लंगर-ख़ाने में आटा पकता रहे, और रोटी तय्यार रहे, रोटी मांगने वाले को रोटी दी जाए और कोई ख़ाली हाथ न जाए।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया कि लंगर में आटा पकता रहे और रोटी तैयार रहे। रोटी मांगने वाले को रोटी दी जाए और कोई ख़ाली हाथ न जाए।

शैख़ हामिद अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आख़िर उम्र तक हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुझसे कभी हिसाब नहीं मांगा और न कभी नाराज़ हुए।

हज़रत शैख़ अहमद दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु को एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने किसी काम से रवाना किया और हिदायत फ़रमाई कि अगले रोज़ जल्दी आ जाना। वे बयान करते हैं कि मैं

अगले रोज़ देरी से पहुंचा तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम मेरी फ़िक्र में एक आदमी रवाना कर चुके थे। मैं जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुंचा तो सबसे पहले हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई। हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हाल दरयाफ़्त फ़रमाने से मेरा दिल बाग़-बाग़ हो गया। मैंने हिसाब देना चाहा तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: हमारा और आपका क्या हिसाब। यह पैसे तुम अपनी ज़रूरत में ख़र्च कर लो।

हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम से एक मर्तबा कुछ क़र्ज़ लिया। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वो क़र्ज़ का रुपया वापस भिजवाया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह नापसंद किया और फ़रमाया कि आप हमारे रुपये को अपने रुपये से अलग समझते हैं।

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहब इरफ़ानी तहरीर करते हैं कि जब से हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने दावे का ऐलान किया और लोगों को यह भी इल्म हुआ कि ख़ुदा तआला ने आपको बशारत दी है कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे, लोग आम तौर पर आपसे कपड़ों का सवाल करते थे और आप कभी किसी को इन्कार नहीं करते थे और बाज़ औक़ात यह हालत हो जाती थी कि आपके बदन पर ही कपड़े रह जाते थे और सब दे दिए जाते थे।

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर में किसी ग़रीब औरत ने कुछ चावल चुरा लिए। लोगों ने उसे देख लिया और शोर पड़ गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस वक़्त अपने कमरे में काम कर रहे थे शोर सुन कर बाहर तशरीफ़ लाए तो यह नज़ारा देखा कि एक ग़रीब ख़स्ता हाल औरत खड़ी है और उसके हाथ में थोड़े से चावलों की गठड़ी है। हज़रत मसीह मौऊद को वाक़या का इल्म हुआ और उस ग़रीब औरत का हुलिया देखा तो आपका दिल पसीज गया। फ़रमाया यह भूकी और कंगाल मालूम होती है इसे कुछ चावल देकर रुख़सत कर दो और भी दे दो और ख़ुदा की सत्तारी का तरीक़ा इख़्तियार करो। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब यह वाक़या बयान करके लिखते कि इस घटना पर कोई जल्दबाज़ व्यक्ति कह सकता है कि यह बात तो चोरी पर दिलेरी पैदा करने वाली है या एक चोर है उसको आप दिलेर बना रहे हैं, मगर समझदार लोग समझते हैं, अक़्लमंद समझता है कि जब माल ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद का अपना था और लेने वाली औरत एक भूखी, भूखों मरती कंगाल औरत थी तो यह चोरी पर मदद नहीं बल्कि वास्तव में मिसकीन को खाना खिलाने में दाख़िल है। हदीसों से साबित है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी ऐसे हालात में जबकि चोरी करने वाला बहुत ग़रीब हो और इन्तिहाई भूख की हालत में कोई खाने की चीज़ उठा ले तो उसे चोर नहीं माना बल्कि अंदेखा करने से काम लिया है। ये है अपने आक़ा की कामिल इत्तिबा (पूर्ण अनुसरण) के नमूने।

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व अला अब्दिकल मसीहिल मौऊदि व बारिक व सल्लिम.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْ کُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131